ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

Volume-1 No. 1 February, 2014

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Refereed Research Journal

Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर

All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)

Annual Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 500/-
Reseach Scholars/ Students	-	Rs. 200/-
Teachers / Others	-	Rs. 200/-
Single Copy	-	Rs. 125/-

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of

Editor, Sanskritik Pravah, Jaipur

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah'** accepts no responsibility for them.

Address for Correspondence

सांस्कृतिक प्रवाह

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, NRI कॉलोनी के सामने,
प्रतापनगर, जयपुर-302033
website : www.sisnet.co.in, e-mail : editorssrj@gmail.com
Contact : 094143-12288

Published by : Prof. Ashutosh Pant, Secretary
All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
803 Vedang Eights, Nandpuri, Pratapnagar, Jaipur-302033

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

वर्ष 1 अंक 1 फरवरी 2014

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान,

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, NRI कॉलोनी के सामने, प्रतापनगर, जयपुर-302033

website : www.sisnet.co.in,

e-mail : editorssrj@gmail.com, rs_kota07@yahoo.com

Sanskritik Pravah

Patron

Sh. Ram Prasad : Social Worker, Jaipur

Editorial Advisory Board

Prof. M. L. Chhipa : Vice Chancellor
A.B. Vajpeyi Hindi University, Bhopal

Prof. Bhagirath Singh : Vice Chancellor
Raffles University, Nimrana (Raj.)

Prof. K.G. Sharma : Professor, Deptt of History & Indian Culture
Rajashtan University, Jaipur

Sh. Mujaffar Husain : Journalist
& Padamshri Awardee, Mumbai

Prof. P. K. Dashora : Professor, Maharana Pratap University of
Agriculture & Technology, Udaipur

Prof. Ramashraya Rai : ICSSR Profesor, New Delhi

Dr. Kuldeep Chandra Agnihotri : Director, Himachal Research Institute,
Chakmoh - Hamirpur (H.P.)

Chief Editor

Dr. J. P. Sharma : Ex- Professor & Head
Deptt. of Economic Admin. & Financial Management
Rajasthan University, Jaipur

Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal : Ex- Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)

Editorial Board

Prof. Ashutosh Pant : Director, S. K. Technical Campus, Sitapura, Jaipur

Dr. Sheela Rai : Associate Professor, Deptt. of Pol. Science,
Rajasthan University, Jaipur

Dr. Sunil Asopa : Associate Professor, Deptt. of Law
J.N.V. University, Jodhpur

Dr. Vinod Sharma : Associate Professor
Ramanandacharya Sanskrit University, Jaipur

Dr. Premlata Swarnkar : Lecturer, Geography, Govt. Meera Girls College, Udaipur

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
	सम्पादकीय ...	7
1.	भारतीय संस्कृति का इतिहास-लेखन: एक पुनरीक्षण – प्रो. कृष्णगोपाल शर्मा	9
2.	हिन्दू और मुसलमानों के श्रद्धास्पद लोकदेवता गोगाजी – जानकी नारायण श्रीमाली	21
3.	सामाजिक समरसता और समकालीन राजनीति – डॉ. अलका अग्रवाल	41
4.	''युद्ध और धर्म अन्योन्याश्रित हैं'' – प्रो. विभा उपाध्याय	46
5.	अपने अस्तित्व की पहचान का विश्वव्यापी अभियान – मुजफ्फर हुसैन	51
6.	प्राचीन भारतीय संस्कृति के संदर्भ में मूल्यपरक शिक्षा – डॉ.एम.एल.साहू – डॉ. हरिसिंह राजपुरोहित	57
7.	Shuddhi: Scriptural Basis and Early Precedent - Shreerang Arvind Godbole	67
8.	Secularism, Freedom of Religion and Special Rights of the Minorities Under the Constitution of India : An Analysis - Prof.. Ram Karan Sharma	83

लेखक परिचय

1. **डॉ. कृष्ण गोपाल शर्मा**
   प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति एवं निदेशक, राजस्थान अध्ययन केन्द्र
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

2. **जानकी नारायण श्रीमाली**
   सचिव, अ.भा. इतिहास संकलन योजना, बीकानेर

3. **डॉ. अलका अग्रवाल**
   वरिष्ठ व्याख्याता, राजनीति विज्ञान
   राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर

4. **डा. विभा उपाध्याय**
   प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

5. **डॉ.एम.एल.साहू**
   पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास
   राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जालोर, कोटा

6. **डॉ. हरिसिंह राजपुरोहित**
   विभागाध्यक्ष, संस्कृत
   राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जालोर

7. **मुजफ्फर हुसैन**
   प्रसिद्ध पत्रकार एवं 'पद्मश्री' सम्मान प्राप्त, मुम्बई

8. **डॉ. श्रीरंग अरविन्द गोडबोले**
   चिकित्सक, औंध, पुणे (महाराष्ट्र)

9. **डॉ. राम करण शर्मा**
   प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, विधि
   निम्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सम्पादकीय ...

'सांस्कृतिक प्रवाह' शोध पत्रिका के प्रवेशांक को सुधी पाठकों, विद्वानों, संस्कृतिकर्मियों, समाज से जुड़े व्यक्तियों इत्यादि हेतु प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस शोध पत्रिका को भारतीय सनातन मूल्यों व ऋषियों की ऋतम्भरा प्रज्ञा के चिरन्तन मंथन के आलोक में मानव के समग्र कल्याण की भावना को केन्द्र में रखकर प्रकाशित किये जाने का निर्णय लिया गया है।

मानव व्यवहार में परम्पराएं, भाषा, साहित्य, शिक्षा, दर्शन, स्थापत्य इत्यादि कलात्मक विधाओं की निर्णायक भूमिका रहती है। सुविचारित और सुसंस्कारित जीवन दर्शन समाज को समृद्ध ही नहीं करता अपितु उसे पल्लवित और पुष्पित भी करता है। भारतीय परम्परा में आर्य मनीषियों ने एक स्वर से सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक रूप से मानवीय आचरण की शैली को 'संस्कृति' कहा है। संस्कृति समग्रता में सन्निहित है और चिर प्रगतिशील रही है। वस्तुगत अभिव्यक्तियों के साथ-साथ आत्मनिष्ठ संस्कारों का परिमार्जन संस्कृति की विशेषता रही है। संस्कृति समष्टि का नाम है। यजुर्वेद के सप्तम अध्याय के 14वें मंत्र के भाष्य में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट किया है कि अग्निरूप मार्गदर्शन से ही योग और विद्यादान द्वारा मनुष्य जिस नीति पर चलता है वही 'संस्कृति' है। विद्वानों ने संस्कृति को मूल्यों के आत्मबोध की परम्परा माना है।

श्री अरविन्द ने भारतीय संस्कृति की प्रणाली में जीवन मूल्य और जीवन संबंधी चिन्तन को यथेष्ठ मान्यता और उचित स्थान दिया है। इसकी विलक्षणता इस तथ्य में निहित है कि जो चीज अन्य अधिकतम संस्कृतियों में अव्यवस्थित या अस्त-व्यस्त है या अपूर्ण रूप से प्रकट हुई है उसे भारतीय संस्कृति ने वस्तुतः अधिक स्पष्ट कर उसकी सभी संभावनाओं की थाह लेने और उसके पहलुओं और दिशाओं को निर्धारित करने तथा उसे मानव जाति के लिए एक समाज पर सुनिश्चित, व्यापक और व्यवहारित आदर्श के रूप में प्रस्थापित करने का प्रयत्न किया है। इसी केन्द्रीभूत तथ्य को फलीभूत करने के लिए भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों, विचारधाराओं, पंथों, मान्यताओं इत्यादि के मध्य 'सांस्कृतिक समन्वय' स्थापित करने हेतु प्रस्तुत शोध पत्रिका का प्रकाशन किये जाने का निर्णय लिया गया ताकि भारत की मूल धरोहर पर चिन्तन और मनन के बहुआयामी मार्ग विकसित हो सकें।

'सांस्कृतिक प्रवाह' अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका है जिसमें संस्कृति तथा सामाजिक समन्वय से संबंधित सभी पक्षों पर आलेख आमंत्रित रहेंगे तथा जिनमें संस्कार, धर्म, सांस्कृतिक गतिविधियों इत्यादि के विषय में वस्तुनिष्ठ विवेचन शोध संदर्भों के साथ प्रकाशित किये जायेंगे।

तात्विक चिन्तन की सतत प्रक्रिया स्वतंत्र मेधा की अपेक्षा रखती है। इसलिए सारगर्भित मेधा से उत्पन्न प्रस्तुत आलेख समाज के सभी वर्गों के जीवन में नवचेतना का संचार कर '**स्वस्ति पन्थामनुचरेम**' उक्ति को चरितार्थ करेंगे। इस सद्भाव के साथ प्रस्तुत प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। लेख विषयक सुझाव और सम्मतियां हमारा उत्साहवर्धन करेंगी। इसी आशा और विश्वास के साथ यह अंक पाठकों को सौंपा जा रहा है।

– सम्पादक